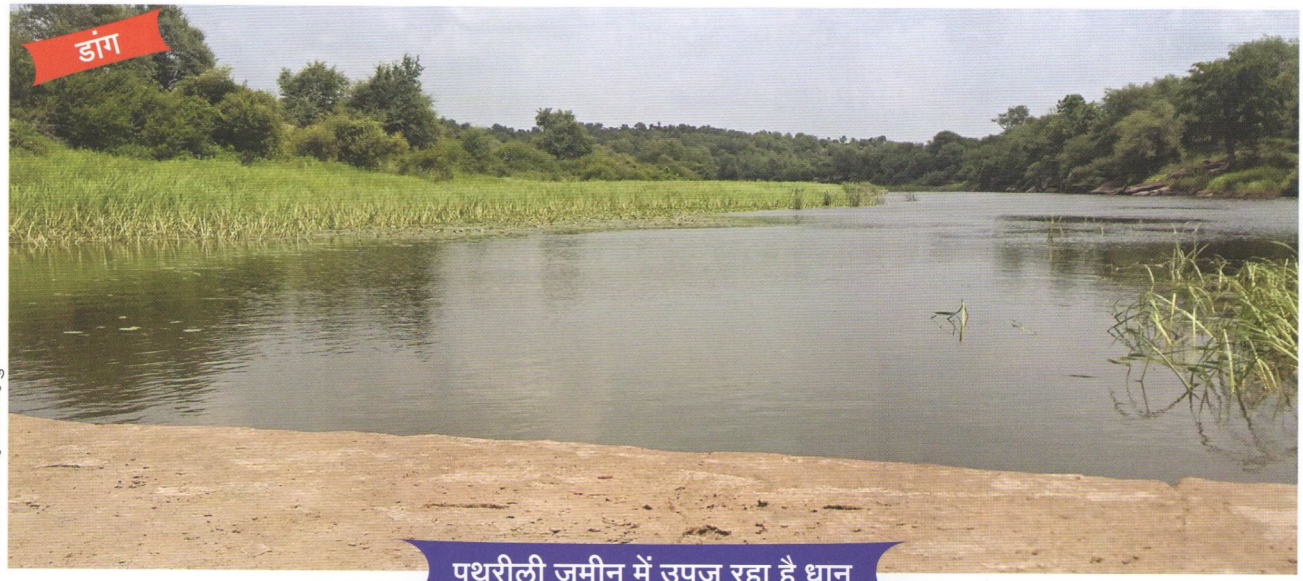

सभी छाया चित्र : हरिओमसिंह गुर्जर

पथरीली जमीन में उपज रहा है धान

पैगारों ने बदली दशा

हरिओमसिंह गुर्जर

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, करौली

चम्बल के बीहड़ एवं कैलादेवी अभयारण्य क्षेत्र में बसे करौली जिले के दो दर्जन गांवों में भौगोलिक विषमताओं के बावजूद सामुदायिक सहभागिता से जल संरक्षण एवं पैगारे (खेत) निर्माण का जो कार्य किया गया है उससे क्षेत्र की दशा और दिशा बदल गई है।

इस उबड़-खाबड़ पथरीले क्षेत्र में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़ेपन के कारण विकास की गति धीमी रही है। डांग के गांवों में आजीविका का प्रमुख साधन पशुपालन एवं छोटे-छोटे खेतों में कृषि कार्य करना है। खेती भी केवल वर्षा आधारित है। किसान बरसाती नालों में पत्थरों को दीवारनुमा बनाकर वर्षा के बहाव की मिट्टी रोकता है जिसे खेत के रूप में तैयार होने में 2 से 5 वर्ष का समय लगता है। ये खेत ही स्थानीय भाषा में 'पैगारा' कहे जाते हैं।

डांग क्षेत्र में पूर्वजों द्वारा तैयार की गई पैगारे की कला का संसाधनों के अभाव में विस्तार नहीं हो पाया था। केवल नियमित वर्षा के समय ही पैगारे खेती के काम आ रहे थे, ऐसे में इस कला को डांग क्षेत्र में आंदोलन का रूप दिया जल संरक्षण के लिए प्रयासरत संस्था 'ग्राम गौरव संस्थान' ने।

कम वर्षा के समय पैगारों में पानी एकत्रित नहीं हो पाता था वहीं तेज बहाव के समय पत्थरों की दीवार गिर जाने से पैगारों की मिट्टी कट कर चली जाती थी। इन दोनों समस्याओं का निराकरण करने के साथ सामुदायिक सहयोग की भावना से 'ग्राम गौरव संस्थान' द्वारा पक्के निर्माण कराए गए हैं।

कम वर्षा की स्थिति में स्थानीय लोगों को अपने मवेशियों को लेकर पानी की तलाश में चम्बल नदी के पास अथवा मध्यप्रदेश में पलायन करना पड़ता था। अब प्रत्येक गांव में वर्षभर वर्षा पानी एकत्रित रखने के लिए तीन प्रकार के जल स्रोतों का निर्माण कराया गया है। सम्पूर्ण गांव के मवेशियों एवं आम लोगों की खातिर जल की उपलब्धता के लिये तैयार किए गए जल स्रोत का नाम दिया गया है 'धरमताल'। इसमें वर्ष भर पानी की उपलब्धता रहती है। इसका निर्माण गांव के समीप सार्वजनिक स्थान पर किया जाता है, इसके पानी का उपयोग सिंचाई के रूप में नहीं किया जाता है।

कुछ परिवारों द्वारा मिलकर तैयार करवाए गए जल स्त्रोत को 'पोखर' कहा जाता है इसमें किसान परिवार सिंघाड़े एवं धान की फसल सामुदायिक कृषि के रूप में करते हैं। एकत्रित पानी रबी की फसल में सिंचाई के काम आता है। तीसरे प्रकार का होता है पैगारा। यह किसी भी नाले के अंतिम छोर की तरफ होता है। पैगारा एक परिवार के स्वामित्व वाला होता है तथा सीढ़ीनुमा श्रृंखला में पैगारों की संख्या बढ़ती जाती है।

'ग्राम गौरव संस्थान' द्वारा जल स्त्रोत निर्माण एवं पैगारे निर्माण से पूर्व गांव में जल समिति अथवा जल संसद का गठन किया जाता है। जिसकी नियमित बैठक में स्थान चयन एवं श्रम व लागत का निर्णय आपसी सहमति से किया जाता है। सर्व सम्मति से लिए गए फैसले के कारण गांव के सभी लोगों की भागीदारी रहती है।

जल स्त्रोतों एवं पैगारों के निर्माण से वर्षा जल संरक्षण होने के साथ ही वर्षभर पानी की उपलब्धता रहती है। वहीं जंगली जानवरों को भी पेयजल उपलब्ध हो जाता है। जिन गांवों में पैगारे निर्माण से पूर्व लोग पलायन कर जाते थे उन गांवों में अब वर्षभर फसलें लहलहाती हैं। खरीफ में बाजरा, ज्वार, धान तथा रबी के मौसम में गेहूं व सरसों की फसल बड़ी मात्रा में पैदा की जाने लगी है।

नाबार्ड बना सहयोगी

पैगारों के निर्माण में आर्थिक सहयोग के लिए नाबार्ड ने रुचि दिखाई है। इस वर्ष 13 पैगारों के निर्माण पर 13 लाख रुपये की लागत आई है इसमें आधी लागत नाबार्ड द्वारा वहन की गई है। 'ग्राम गौरव संस्थान' के जगदीश गुर्जर कहते हैं ''नाबार्ड द्वारा पक्के धरमताल निर्माण में आर्थिक मदद दिए जाने से आमजन का आर्थिक भार कम हुआ है वहीं पैगारे निर्माण आन्दोलन का रूप ले रहा है।'' नाबार्ड द्वारा सीमेन्ट एवं बजरी तथा निर्माण मिस्त्री उपलब्ध कराए जाते हैं। ग्रामीणों द्वारा मानव श्रम, पत्थर उपलब्ध कराए जाते हैं। निर्माण लागत का सम्पूर्ण हिसाब जल समिति द्वारा रखा जाता है।

बिना लागत सिंचाई

पैगारे खेती के काम लिए जाते हैं। जिनके उच्च स्थान की ओर नाले पर सामुदायिक ताल, पोखर का निर्माण होता है। धरमताल का ओवर फ्लो पोखर में एवं उसके बाद पैगारे में जाता है। रबी की फसल के समय आवश्यकता पर स्वत: ही धरमताल से एवं पोखर से पानी पैगारे की ओर छोड़ा जाता है जिससे बिना लागत के सिंचाई हो जाती है।

'ग्राम गौरव संस्थान' के समयसिंह बताते हैं ''अब वर्षभर पानी की उपलब्धता से डांग क्षेत्र के ये गांव पशुपालन एवं जैविक खेती के नये केन्द्र बनते जा रहे हैं, वहीं आम लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है।'' ग्राम बरकी, लखरूकी, नरेकी, कूलरा के गांवों के किसान उन्नत फसलें ले रहे हैं। जैसा कि ग्राम अलबतकी के हलकू पटेल कहते हैं ''अब हम पत्थर पर धान उगाने लगे हैं।'' •